PART-**1**

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता- ब्रह्मगुप्त

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता (Geographers of Ancient India)

विश्व का प्राचीनतम ज्ञान भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है । रामायण और महाभारत काल से लेकर बारहवीं शती ईस्वी तक अनेक भारतीय विद्वानों ने विभिन्न भौगोलिक पक्षों का वर्णन अपने-अपने ग्रंथों में किया है। प्राचीन काल में भूगोल नाम का कोई अलग विषय नहीं था किन्तु धरातलीय तथा आकाशीय पिण्डों से सम्बंधित अध्ययन क्षेत्रशास्त्र के रूप में प्रचलित था। इसीलिए भूगोल और खगोल को एक-दूसरे से सम्बद्ध माना जाता था। गणितीय भूगोल और खगोलीय भूगोल प्राचीन भूगोल के प्रमुख पक्ष थे। इसके साथ ही भौतिक तथा मानवीय तथ्यों के प्रादेशिक वर्णन भी इसके अन्तर्गत समाहित होते थे। प्राचीन भारत के प्रमुख विद्वान निम्नांकित हैं जिन्होंने अपने ग्रंथों में भूगोल के विभिन्न पक्षों की व्याख्या और वर्णन किये हैं।

(4) ब्रह्मगुप्त

गुप्तकाल के तीसरे प्रमुख खगोलवेत्ता ब्रह्मगुप्त वाराहमिहिर के समकालीन थे उन्होंने 'व्रह्म सिद्धांत' और 'खण्डखाद्य' नामक ग्रंथ लिखे जिनमें खगोलिकीय भूगोल सम्बन्धी तथ्य और सिद्धान्त दिये गये हैं। उन्होंने तेल, जल और पारा से घूमने वाले कुछ यंत्रों का भी वर्णन किया है। ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी का व्यास 1581 योजन (7905 मील) बताया था जो पृथ्वी के वास्तविक व्यास (7925 मील) के लगभग समान है।